


---

# Munikrita Shri Hari Stuti

——  
मुनिःकृता श्रीःहरिस्तुतिः

——  
Document Information



---

Text title : Munikrita Shri Hari Stuti

File name : munikRRitAshrIharistutiH.itx

Category : vishhnu, svAminArAyaNa, krishna, stuti, aShTaka

Location : doc\_vishhnu

Acknowledge-Permission: Swaminarayan Sampradaya

Latest update : August 8, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 9, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



---

## Munikrita Shri Hari Stuti

---

मुनिऋता श्रीहरिस्तुतिः

---



(पञ्चयामरम्)

समस्त पापघातिनं समस्ततापनाशिनं  
समस्तदुःखहारिणं समस्तसौख्यकारिणम् ।  
समस्तधामधारिणं समस्तलोकपालिनं  
नमामि धर्मनन्दनं समस्तलोकवल्लभम् ॥ १ ॥

कुशास्त्रमार्गभण्डकं सुशास्त्रराध्यमण्डकं  
कुमार्गचित्तदण्डकं ल्यङ्गिसनाध्वपोषकम् ।  
निजाश्रितारिनाशकं स्वमूर्तिशर्मदायकं  
नमामि धर्मनन्दनं समस्तलोकवल्लभम् ॥ २ ॥

अधर्ममूलछेदकं सद्बुद्धवाध्वयालकं  
समग्रधर्मशंसकं विमोक्षबोधदायकम् ।  
सुनीतिरीतिदर्शकं प्रपन्नशुचिरक्षकं  
नमामि धर्मनन्दनं समस्तलोकवल्लभम् ॥ ३ ॥

प्रकाशदं प्रभावदं प्रतापदं प्रतोषदं  
सुयुक्तिदं सुतुष्टिदं सुपुष्टिदं सुबुद्धिदम् ।  
विबोधदं विनोददं विमोददं विमोक्षदं  
नमामि धर्मनन्दनं समस्तलोकवल्लभम् ॥ ४ ॥

सुदर्शदं सुभद्रदं सुशान्तिदं सुकान्तिदं  
क्षमाकरं यशस्करं शुभङ्करं सुभङ्करम् ।  
यशस्विनं तपस्विनं तरस्विनं य वाग्मिनं  
नमामि धर्मनन्दनं समस्तलोकवल्लभम् ॥ ५ ॥

नितान्तधामराजितं स्वमुक्तवृन्दसेवितं  
मुनीन्द्रजातपूजितं स्वभक्तसङ्घप्रार्थितम् ।  
सुरासुरेन्द्रवन्दितं क्षमादयादिमण्डितं

नमामि धर्मनन्दनं समस्तलोकवल्लभम् ॥ ६ ॥

समस्तसिद्धिदायकं तथापि सक्तिवर्जितं  
समस्त भुक्तिदायकं तथापि भोगवर्जितम् ।  
समस्तलोकपालकं तथापि गर्ववर्जितं  
नमामि धर्मनन्दनं समस्तलोकवल्लभम् ॥ ७ ॥

यदीयभावपट्टके निभाव्यते परा प्रभा  
यदीयपादपङ्कजे सुनूपुरोत्थसंविभा ।  
यदीयपाणिपल्लवे वराभयात्मिका कृपा  
नमामि धर्मनन्दनं समस्तलोकवल्लभम् ॥ ८ ॥

ॐति श्रीस्वामिनारायणबापायत्रिमृतसागरे यतुर्थप्रवाले  
नव तरङ्गे मुनिःकृता श्रीःहरिःस्तुतिः सम्पूर्णा ।

---

—  
*Munikrita Shri Hari Stuti*

pdf was typeset on August 9, 2024

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

